वार्तालाप-540, कलकत्ता, पार्ट-1, दिनांक.24.03.08
Disc.CD No.540, dated 24.3.08 at Calcutta, Part-1

समयः 00.01-02.00

जिज्ञासुः ....चार काल एक युग का भी होता है और एक दिन का भी होता है।....

बाबाः आदि काल। सृष्टि में कहते हैं आदि काल, अनादि काल, मध्य काल और अंत काल। वो सिर्फ संगमयुग के हिसाब से कहते हैं। संगमयुग में जब बाप आते हैं तो आदि काल है, प्रत्यक्ष होना जब शुरू होते हैं तो मध्य काल है, प्रत्यक्षता की सम्पूर्ण आहुति होती है तो अंत काल है। ऐसे ही ब्रॉड ड्रामा में नई सतयुगी सृष्टि जब बनकर तैयार होती है तो आदि काल है। मध्य काल में फिर परिवर्तन होता है ईश्वरीय कार्य व्यवहार बदल जाता है। आसुरी सृष्टि की शुरूआत होती है और कलियुग का अंत होता है, सतयुग की आदि होनी होती है तो फिर बाप आते हैं उसे संगम कहा जाता है; परंतु ये अनादि सृष्टि जो चलती रहती है उसे कहते हैं अनादि सृष्टि। सृष्टि का आदि नहीं कह सकते। सृष्टि तो अनादि है और अनादि काल तक यूँ ही चलती रहती है।

Time: 00.01-02.00
Student: .... There are four phases of an Age as well as a day….
Baba: Beginning period. It is said, the beginning period (*aadi kaal*), the eternal period (*anaadi kaal*), the middle period (*madhya kaal*) and the last period (*anth kaal*) of the world. That is said only from the point of view of the Confluence Age. When the Father comes in the Confluence Age it is the beginning period; when He starts being revealed it is the middle period; when the revelation is about to complete, it is the last period. Similarly, in the broad drama, when the new Golden-Age world is ready, it is the beginning period. Transformation takes place again in the middle period; the divine activities change. The demoniac world begins and when the Iron Age ends, when the Golden Age is to begin, the Father comes again. That is called the Confluence. But this world which continues eternally is called an eternal world. There cannot be a beginning for the world. The world is eternal and it continues like this for eternity.

समयः 02.35-03.02

जिज्ञासुः सुप्रीम सोल तुरीया सोल है। तुरीया का अर्थ क्या है?

बाबाः तुरीया माना सबसे अलग-थलग। 500-700 करोड़ जो भी मनुष्यात्मायें हैं या जो भी पशु, पक्षी, कीट पशु पक्षी, पतंगे आदि हैं उनकी आत्माओं से उसका कार्य बिल्कुल निराला है। इसलिए उसको कहते हैं तुरीया, निराला।

Time: 02.35-03.02
Student: Supreme Soul is a *turiya* soul. What is meant by *turiya*?
Baba: *Turiya* means different from all the others. His task is completely different from all the 5-7 billion human souls or the souls of animals, birds, insects, moths, etc. This is why He is called *turiya*, unique.

समयः 03.10-05.15

जिज्ञासुः बाबा, जो होली का त्योहार बाहर में मनाया जाता है वो क्यों मनाया जाता है? उसका बेहद का मतलब क्या है?

बाबाः होली का मतलब कितनी बार अव्यक्त वाणी में बताया। होली का मतलब जो हो गया सो हो गया। होली में अग्नि जलाते हैं, लकडियाँ इकट्ठी करते हैं। ये है विकारों की लकड़ियाँ। ढ़ाई हजार वर्ष के ड्रामा में जो विकारी बने हैं वो बची-बचाई जो भी लकड़ियाँ हैं विकारों की वो सारी आहुति जल जाती हैं। आत्मा है होलिका। आत्मा नहीं जलती है और देहभान सारा इस होली में जल जाता है। रंग की धुलियाँ मनाते हैं। जो रंग फेकते हैं वो धूल भरा रंग फेकते हैं माना देहाभिमान की होली मनाते हैं। आजकल तो और ही होली का स्वरूप बहुत बिगड़ गया। एक दूसरे के ऊपर कीचड़ भी बहुत फेंकते हैं। जैसे ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया में अभी कीचड़ फेंका जाता है। ये ग्लानि का गंद है जो फेंकते रहते हैं। ये तामसी रूप हो गया है होली मनाने का। फिर नये-2 कपड़े भी पहनते हैं। पुराने कपड़े त्यागते हैं। ये है सतयुग में जाने की यादगार। नई दुनिया में जावेंगे तो जैसे जो होना था सो हो गया। जो विकारों की होली मनानी थी वो होली मनाए ली।

Time: 03.10-05.15

Student: Baba, why is Holi celebrated in the outside world? What does it mean in an unlimited sense?

Baba: Holi's meaning has been mentioned so many times in the *Avyakta vanis*. Holi means whatever has happened has happened. Fire is lit during Holi, logs are collected. These are the logs of vices. We became vicious in the two thousand five hundred years drama; so all the remaining logs of vices is given as a burnt offering. The soul is Holika. The soul is not burnt and the entire body consciousness is burnt in this Holi. They celebrate the *dhulia* of colour. The colour that they throw is a dusty colour, i.e. they celebrate the Holi of body consciousness. Nowadays, the form of Holi has spoiled even more. They also throw a lot of muck at each other. For example, muck is thrown in the Confluence Age world of Brahmins. It is the dirt of defamation that they keep throwing. This is the degraded form of celebrating Holi. Then they also wear new clothes. They discard the old clothes. This is a memorial of going to the Golden Age. When you go to the new world, it is as if whatever had to happen has happened. The Holi of vices was already celebrated.

समयः 07.17- 08.00

जिज्ञासुः बाबा, स्त्री पुरुष दोनों पाप करते हैं। स्त्री लोगों को अग्नि परीक्षा देना पड़ता है। पुरुष को क्यों नहीं देना पड़ता?

बाबाः माना पुरूषों को अग्नि परीक्षा नहीं देनी पड़ती है? ये तो कोई बात नहीं हुई। जितने भी पुरूष हैं वो परीक्षा नहीं देते हैं विकारों की क्या?

जिज्ञासु- स्त्री की तरह। स्त्री को अग्नि परीक्षा देनी पड़ती है।

किसीने कहा- सीता को दिखाया ना अग्नि परिक्षा....।

बाबा- अरे, वो सीता माना आत्मा। तुम सब सीतायें हो। कोई एक सीता की बात नहीं है। सब सीतायें अग्नि परीक्षा से गुजरती हैं। राम है एक और सीतायें हैं अनेक।

Time: 07.17-08.00
Student: Baba, both a man as well as a woman commit sins. Women have to pass through the fire test (*agnipariksha*). Why are the men not required to pass through this test?
Baba: Does it mean, men are not required to pass through the fire test? This is not right. Don't all men pass through the test of vices?
Student: Like women. Woman has to pass through the fire test.
Another student: Baba, Sita is shown to be giving the fire test, isn't she....?
Baba: Arey, that Sita means soul. You all are Sitas. It is not about one Sita. All the Sitas pass through the fire test. Ram is one and Sitas are many.

समयः 08.10-08.46

जिज्ञासुः बाबा, सतयुग में गुरु.....?

बाबाः सतयुग में और त्रेता में वहाँ अलग से गुरू नहीं होता है। जो बाप होता है वही गुरू होता है। वही परम्परा विक्रमादित्य तक चलती रहती है। वो बाप ही गुरू बनकर के बताता है कि ऐसे-2 मंदिर निर्माण करो। मंदिर बनाओ, शिव की पूजा करो, अव्यभिचारी पूजा करो।

Time: 08.10-08.46
Student: Baba, [are there] gurus in the Golden Age?
Baba: There are no separate gurus in the Golden Age and Silver Age. The father himself is a guru. The same tradition continues up until [the time of] Vikramaditya. The father himself becomes a guru and tells him, "Construct a temple like this. Build a temple, worship Shiva, worship Him in an unadulterated manner".

समयः 09.05-09.50

जिज्ञासुः बाबा रामायण में बोल दिया जगतम पितरम वंदे पार्वती परमेश्वरो। उसका क्लेरिफिकेशन क्या है?

बाबा- जगत के जो माता-पिता हैं, सारे जगत के, मनुष्य सृष्टि के मात-पिता वो जगत के पितर हैं। माना सारे जगत के माता-पिता हैं पार्वती और परमेश्वर। माना शंकर और पार्वती सारे जगत के माता-पिता हैं। यही उसका अर्थ हुआ। उनको मैं वंदना करता हूँ।

Time: 09.05-09.50
Student: Baba, it has been said in Ramayana, *Jagatam pitaram vandey Parvati Parmeshwaro*. What is its clarification?
Baba: The mother and father of the world, of the entire world, the mother and the father of the human world are the ancestors of the world. It means that the mother and father of the entire world are Parvati and Parmeshwar. It means that Shankar and Parvati are the parents of the entire world. This is its meaning. I bow before them.

समयः 09.55-11.20

जिज्ञासुः बाबा, काशी करवट में सज़ा खाने का राज़ क्या है? बाबा वो सजा कैसी होती है? बाबा समझा नहीं....?

बाबाः काशी करवट में जो करवट खाने जाते हैं, फैसला कर लेते हैं कि हम काशी करवट खावेंगे वो एक शिव के ऊपर जाकर अर्पण हो जाते हैं। समझते नहीं हैं। बिना जाने, बिना समझे शिव पर अर्पण हो जाते हैं जाकर। वो बात भक्तिमार्ग की है या ज्ञानमार्ग की? भक्तिमार्ग की। और भक्तिमार्ग का फाउन्डेशन असली कहाँ पडता है? संगमयुग में फाउनडेशन पड़ता है। यहाँ अभी जो भी अर्पण हो रहे हैं वो सब काशी करवट खा रहे हैं या निश्चय-अनिश्चय का चक्र चलता रहता है उनको? शिव कौन है? मैं जो हूँ, जैसा हूँ, जिस रूप में पार्ट बजाए रहा हूँ ऐसा दृढ़ पक्का निश्चय होकर के सरेण्डर हो जाते हैं या कुछ संशय बना रहता है? संशय बना रहता है। घड़ी-2 संशय आता है इसलिए पूरे पाप भस्म नहीं होते। फिर नये सिरे से पाप करना शुरू कर देते हैं और सौ गुना पाप चढ़ने लग पड़ता है।

Time: 09.55-11.20

Student: Baba, what is the secret behind getting punishments in the process of *Kashi karvat*? Baba, what kind of a punishment is it? Idid not understand Baba?

Baba: Those who go to perform (the ritual of) *Kashi karvat*, those who resolve to undergo *Kashi karvat* sacrifice themselves on one Shiv. They do not understand. They sacrifice themselves on Shiv without knowing, without understanding. Is it the topic of the path of *bhakti* or of the path of knowledge? It is of the path of *bhakti*. And where is the real foundation of the path of *bhakti* laid? The foundation is laid in the Confluence Age. Are all those who are surrendering here now undergoing *Kashi karvat* or do they still pass through the cycle of faith and faithlessness? Who is Shiv? Do they surrender with the firm faith on what I am, how I am, and in which form I am playing My part or do they have some doubts? They have doubts. They repeatedly get doubts. This is why their sins are not destroyed completely. They start committing sins afresh. And they start accumulating hundred times sins.

समयः 11.30-14.05

जिज्ञासुः बाबा, सुप्रीम सोल ने 48 साल में दादा लेखराज के तन में प्रवेश कर के मुरली चलाया। उसके तन में सुप्रीम सोल रह के भी तीन साल क्यों लग गया ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय लिखने में तीन साल क्यों लग गया**?**

Time: 11.30-14.05

Student: Baba, Supreme Soul entered in the body of Dada Lekhraj in the year 1948 and narrated Murli. Despite the Supreme Soul being in his body, why did it take 3 years to write *Brahmakumari Ishwariya Vishwavidyalay*?

बाबाः कोई भी काम जो शुरू होता है वो एकदम थोडा ही शुरू हो जाता है। ये तो ड्रामा ही जूँ मिसल चलता है। पहले तो बात एक की बुद्धि में आयेगी कि सबकी बुद्धि में इकट्ठी आ जायेगी? पहले एक की बुद्धि में आवेगी। तो धीरे-2 वो बात फैलती गई। बाबा की वाणी चलती गई, सुननेवाले सुनते रहे और धारण करते रहे। धीरे-2 ये फैसला हुआ 1950 तक ये ब्रह्मा का कार्य तो हिन्दुस्तान में चलना चाहिए। ये पाकिस्तान में तो मुसलमानों का देश है। कोई ब्रह्मा को मानता भी नहीं है। तो वहाँ से ट्रान्सफर हो गये। माउन्ट आबू में जब बडी कोठी मिल गई, जमावड़ा जम गया तब दिल्ली में आकर के सेवा शुरू हुई। पहला सेवाकेन्द्र

खोला गया उसका नाम रखा गया ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय। उससे पहले कोई भी आश्रम का नाम ब्रह्माकुमारी विश्वविद्यालय नहीं था। धीरे-3 चार-पाँच साल के बाद कही प्रैक्टिकल में शुरू हुआ।

Baba: Whenever any task is started, it doesn't start immediately. This drama itself moves like a louse (*joon*). Will the idea come in the intellect of one first or will it come in the intellects of everyone simultaneously? First it will come in the intellect of one. So, gradually that idea went on spreading. Baba went on narrating *vani*; listeners continued to listen and inculcate it. Gradually, it was decided by 1950 that this task of Brahma should be carried out in India. This Pakistan is a Muslim country. Nobody believes in Brahma either. So, they were transferred from there. When they got a big bunglow (*kothi*) in Mt. Abu, and when the gathering was formed there, the service began in Delhi. The first service center (*sevakendra*) was opened and was named *Brahmakumari Ishwariya Vishwavidyalaya*. Prior to that there was no *ashram* with the name *Brahmakumari Vishwavidyalay*. Gradually, it started in practical after four-five years.

कोई भी काम होता है तो पहले मनसा के अंदर चलता है या सीधा ही प्रैक्टिकल में शुरू हो जाता है? पहले मन्सा के अंदर चलता है, फिर वाचा में आता है। वाचा में आते-2 गुजरते-2 फिर प्रैक्टिकल में होता है। ये तो होता ही है। इसमें कोई अजूबा-गरूबा वन्ड़रफुल बात नहीं है कि 3-4 साल क्यों लग गये। आध्यात्मिक ईश्वरीय विश्वविद्यालय सन 76 में ही नाम लिख गया क्या?

जिज्ञासु- मुरली में आया 76 में लिखना पडे।

बाबा- नहीं। आध्यात्मिक ईश्वरीय विश्वविद्यालय नाम तो कम्पिल में जाकरके पड़ा प्रैक्टिकल में। उससे पहले आध्यात्मिक ईश्वरीय विश्वविद्यालय नाम था ही नहीं।

Does any task initially begin in the mind or does it start directly in practical? First it starts in the mind and then it comes to speech. After passing through the stage of speech, it takes place in practical. This certainly happens. There is nothing strange or wonderful in this, that why did it take 3-4 years? Was the name *Adhyatmik Ishwariya Vishwavidyalay* written in the year 1976 itself?

Student: It was mentioned in the Murli that we have to write it in (19)76.

Baba: No. The name *Adhyatmik Ishwariya Vishwavidyalay* was coined in practical in Kampil. Before that the name *Adhyatmik Ishwariya Vishwavidyalay* did not exist at all.

समयः 18.35-19.50

जिज्ञासुः जैसे हद में दुनिया का आदमी लोग पत्थर में पानी डालते।

बाबाः पत्थर के लिंग पर पानी डालते हैं, हाँ, जी।

जिज्ञासुः पानी डालते हैं तो वो लोग सोचते हैं कि हम लोगों का सुखी संसार हो जाए।

बाबाः अरे, ये कहो कि ये शूटिंग ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया में कैसे होती है, जो शिवलिंग के ऊपर पानी डालते हैं।

जिज्ञासुः उधर अमृतवेला अज्ञान निद्रा में जब हम लोग अमृतवेले सो जाते हैं।

बाबाः नहीं। जब बेसिक नॉलेज चलती है तो जो लिंग रूप में पार्ट बजानेवाली प्रजापिता की आत्मा है उसको भी जो भक्त आत्मायें है बी.के.वाली वो भी ज्ञान का जल चढ़ाती है। वो यहाँ शूटिंग होती है उन भक्तों के द्वारा। नहीं तो वो तो ज्ञानी का अव्वल नम्बर पार्ट बजानेवाली आत्मा है। उसको कोई ज्ञान जल क्या देगा। कोई ब्रह्माकुमार-कुमारी ऐसे पार्टधारी को ज्ञान सुना करके सन्तुष्ट कर सकता है क्या? कर सकता है? नहीं कर सकता है।

Time: 18.35-19.50
Student: For example, people of the outside world pour water on stones.
Baba: They pour water on stone *ling*; yes.
Student: When they pour water, they think that their world should be filled with happiness.
Baba: Arey, ask, how the shooting of pouring water on Shivling takes place in the Confluence Age world of Brahmins.
Student: When we sleep in the sleep of ignorance at amritvela....
Baba: No. When the basic knowledge is narrated, the soul of Prajapita who plays a part in the form of a ling is offered water of knowledge by the devotee souls, i.e. BKs. That shooting takes place here through those devotees. Otherwise, he is the soul who plays the number one part of a knowledgeable one. How can anyone give him the water of knowledge? Can any Brahmakumar- kumari satisfy such an actor by narrating knowledge? Can they? They cannot.

समयः 20.10-21.00

जिज्ञासुः मैं कहना यही चाहता हूँ कि जैसे अमृतवेला में उठते हैं हम लोग जोर-2 से उठ जाते हैं अमृतवेला करने के लिए लेकिन क्या होता है आत्मा सोचते हैं, सोचने के बाद सो जाते हैं। इसका मतलब यही है जो हमारा पिता परमपिता का ज्ञान जल जो है वो अपना अंदर में है ही नहीं इसलिए हम उठ रहे हैं।

बाबाः तो औरों में क्यों होता है जो औरों का मंथन चलता है। तुम्हारा नहीं चलता।

जिज्ञासु- हमारा ही बतायेंगे ना।

बाबा- औरों का चलता तो है।

जिज्ञासु- हाँ, जी।

बाबा- तो औंरो का क्यों चलता है; तुम्हारा क्यों नहीं चलता है?

जिज्ञासु- बात तो सही है।

बाबा- बात ये सही है पूर्वजन्मों का पाप का बोझा ज्यादा चढ़ा हुआ है तो मंथन नहीं चलने देगा और जिनका पाप का बोझा उतर रहा है उनका मंथन जरूर चलेगा। वो जरूर ईश्वरीय सेवा में लगे रहेंगे और उनका मंथन भी चलेगा और बाप उन बच्चों को याद भी करेंगे।

Time: 20.10-21.00
Student: This is what I want to say that when we wake up at *amritvela*, we wake up enthusiastically to do *amritvela*, but what happens is that we think of the soul and later doze off. It means that the water of knowledge given by our Father, the Supreme Father is not in us; this is why we are not waking up.
Baba: So, why does it happen to others that they churn and you don't churn?
Student: I will talk only about myself, will I not?
Baba: Others are able to churn.

Student: Yes.
Baba: So, why are others able to churn and why are you not able to churn?
Student: This is correct.
Baba: This is correct. When there is more burden of sins of the past births, it will not allow churning to take place and those whose burden of sins is decreasing, will definitely be able to churn. They will certainly be busy in Godly service and they will be able to churn and the Father will also remember those children.

समयः 21.20-23.35

जिज्ञासुः बाबा, लास्ट ट्रेन में एक लाख सूर्यवंशी जायेंगे।

बाबाः लास्ट ट्रेन में एक लाख सूर्यवंशी जायेंगे ये कौनसी मुरली में लिखा है भाई? कोई अव्यक्त वाणी में आया क्या?

जिज्ञासु- इस मुरली में आया कि लास्ट में एक ट्रेन चलेगी सूर्यवंशी।

बाबा- एक ट्रेन चलेगी वो ठीक है। जैसे हिन्दुस्तान-पाकिस्तान का जब खून-खराबा हुआ, बँटवारा हुआ तो पहली ट्रेन जब निकल पड़ी तो निकल पड़ी और उस ट्रेन में से जो जानेवाले थे वो निकल गये। अब वो ट्रेन चाहे अहमदाबाद से चली हो कराची की ओर, चाहे वो ट्रेन कलकत्ते से चली हो, चाहे वो ट्रेन इलाहाबाद से चली हो या बम्बई से चली हो, या बैंगलोर से चली हो। पहली ट्रेन में जो भी हिन्दुस्तान से जानेवाले पाकिस्तान चले गये, वो तो चले गये। सेफ। बाकी उसके बाद जो दूसरी ट्रेनें चली वो सब खटा-खट मारे गये।

जिज्ञासु- वो तो आदि का बात हो गया।

बाबा- वही अंत की बात होनी है। अंत में भी जब ऐसे झगड़ा होगा, मारकाट होगी तो क्या होगा? जिनको खींच होगी, जिनकी बाप से लगन लगी हुई होगी उनको बाप का तार पहुँचेगा और वो निकल जावेंगे।

Time: 21.20-23.35
Student: Baba, one lakh *Suryavanshis* (those who belong to the Sun dynasty) will travel in the last train.
Baba: Brother, in which Murli has it been written that one lakh *Suryavanshis* will travel in the last train? Has it been mentioned in any *Avyakta vani*?
Student: It has been mentioned in this Murli that one train will run in the last period for *Suryavanshis.*
Baba: One train will run. That is correct. For example, when bloodshed took place between Hindustan and Pakistan, when the partition took place, the first train that left, left and those who travelled by that train went [to their destination]. Well, that train could have started from Ahmedabad to Karachi it could have started from Calcutta, from Allahabad, from Bombay or from Bangalore. All those who traveled by the first train from India to Pakistan went safely. Those who travelled by the other trains which started after that were quickly killed.
Student: That is about the beginning.
Baba: The same thing is going to happen in the end. In the end also, when such a dispute takes place, when bloodshed takes place, what will happen? Those who will be pulled [to the Father], those who will be devoted to the Father will get the Father's telegram and they will escape.

जिज्ञासु- वो 2018 के पहले ही हो जायेगा?

बाबा- अब वो कब होता है ये तो तिथि-तारीख नहीं बताई जाती है। जो तब तक आराम से चैन की नींद पड़े-2 सो लो।

जिज्ञासु- लेकिन मुरली में ऐसे बोला गया कि जो लास्ट में जहाँ का अणु तहाँ पहुँच जायेंगे।

बाबा- हाँ जी-2

जिज्ञासु- जैसे कि माउन्ट आबू तब नहीं रहेंगे। अब ये 2036 तक होगा .....

बाबा- अब कहाँ कौन पहुँच जायेगा। जिसको शांतिधाम में पहुँचना होगा वो शांतिधाम में पहुँचेगा। जिसको सुखधाम में पहुँचना होगा वो सुखधाम में पहुँचेगा।

जिज्ञासु- माउन्ट आबू में नहीं रहेंगे।

बाबा- अब जो जहाँ का होगा, जो शांतिधाम के वासी होंगे वो शांतिधाम पहुँचेंगे और जिनका अच्छा पुरूषार्थ होगा वो शांतिधाम से होते हुए सुखधाम में पहुँच जायेंगे।

Student: Will that take place before 2018?

Baba: Well, the date and time isnot mentioned as to when it takes place. So that you can sleep comfortably until then!

Student: But it has been said in a Murli that in the last period, every atom will reach its destined place.

Baba: Yes.

Student: For example, even Mount Abu will not exist at that time. Will that take place by 2036...

Baba: Well, who will reach which place…, the one who has to reach the Abode of Peace will reach the Abode of Peace. The one who has to reach the Abode of Happiness will reach the Abode of Happiness.

Student: They will not live in Mt.Abu.

Baba: Well, whoever belongs to whichever place, whoever is a resident of the Abode of Peace will reach the Abode of Peace and those who make nice *purusharth* (spiritual effort) will reach the Abode of Happiness via the Abode of Peace.

समयः 26.15-28.30

जिज्ञासुः बाबा, भक्तिमार्ग में इतना बड़ा-बड़ा देवी-देवता हमने देखा एक ब्रह्मा को छोडकर के।

बाबाः सारे देवी देवता को तुमने देखा?

जिज्ञासुः हाँ, देखा।.....33 करोड़ जितना हम सब देखा उसके अंदर सिर्फ ब्रह्मा का ही बुजुर्ग शरीर दिखाया और किसी को नहीं दिखाया ।

बाबाः ब्रह्मा का ही बुजुर्ग शरीर देखा, शंकरजी का बुजुर्ग शरीर नहीं देखा?

जिज्ञासु- मजदारी जो ब्रह्मा होता है।

बाबा- मजदारी?

जिज्ञासु- मूँछधारी।

बाबा- मूँछधारी शंकर का नहीं देखा?

Time: 26.15-28.30
Student: Baba, we saw so many great deities except one Brahma on the path of *bhakti* (devotion).
Baba: Did you see all the deities?
Student: Yes, I have seen... Among all the 330 million deities whom I saw, only Brahma is shown to have an old body. Nobody else is shown (with such an old body).
Baba: Did you see only Brahma with an old body? Did you not see the old body of Shankar*ji*?
Student: Brahma who is shown *majdari*.
Baba: *Majdari*?
Student: *Moonchdhari* (a person with moustache).
Baba: Have you not seen Shankar with a moustache?

जिज्ञासु- पका हुआ नहीं है, कच्चा।
बाबा- कच्चा भी है, पक्का भी है। वो तो पक्केवालों का भी बाप है और कच्चेवालों का भी बाप है। सफेद दाढ़ी मूँछ वालों का भी बाप है और काली मूँछ दाढ़ी वालों का भी बाप है। इससे ये साबित होता है कि ब्रह्मा तो सिर्फ दाढ़ी-मूँछवाला ही दिखाया जाता है माना विकारी ही विकारी है, श्याम ही श्याम है। वो सुंदर पार्ट नहीं है। लेकिन शंकर का जो पार्ट है वो श्याम पार्ट भी है माना दाढ़ी-मूँछवाला भी है और क्लीन शेव अर्थात सुंदर पार्ट भी है। एक ही शरीर से सुंदर और एक ही शरीर से श्याम पार्ट बजाता है। पहले श्याम और बाद में सुंदर पार्ट बजाता है।
जिज्ञासु- और एक तरफ से नारा भी लगाते हैं कि शिव बूढा शिव है । शंकर जी को बूढा कहते है लेकिन दिखाने में ब्रह्मा को ही बूढा दिखा देते है।.....
बाबा- नहीं। ऐसा तो नहीं है। शंकर को बू□ा भी दिखाते है, बच्चा भी दिखाते हैं, नौजवान भी दिखाते है। स्त्री चोले में भी दिखाते हैं, पुरुष चोले में भी दिखाते हैं।
Student: It [beard and moustache] is not (grey *(pakka)* it is black (*kachcha*).
Baba: It is black as well as grey (*pakka*). He is the father of the ones having grey [moustache] as well as the ones having black [moustache]. He is the father of those with grey beard and moustache as well as those with black beard and moustache. It proves that Brahma is shown to have just beard and moustache, i.e. he is vicious and only vicious, he is dark and only dark. It is not a beautiful part. But Shankar's part is a dark part, i.e. he has beard and moustache as well as clean shaven, i.e. beautiful part also. He plays a beautiful part as well as a dark part through the same body. First he plays a dark part and then a beautiful part.
Student: And on the one side they also raise a slogan that Shiv is old, very old. Shankarji is called old, but while depicting, they depict only Brahma as old.....
Baba: No. It is not so. Shankar is shown to be old as well as a child. He is also shown to be a youth. He is shown in a female body as well as a male body.

समयः 28.35-30.55
जिज्ञासुः बाबा वकील लोग सादा कपड़े पर काला कोट लगाते हैं, उसका बेहद में क्या राज़ है?

बाबाः कोई की वकालत की जाती है। जो आदमी अपनी बात अपने आप नहीं कह पाता है तो उसकी बात कहने के लिए वकील नियुक्त किये जाते हैं और ये वकील वगैरा जो रखे जाते हैं कोर्ट-कचहरी में ये कलियुगी दुनिया में रखे जाते हैं, जितनी दुनिया पुरानी और तमोप्रधान बन जाती है तब रखे जाते हैं या जब सात्विक दुनिया होती है तब रखे जाते हैं? जितना-2 तमोप्रधान दुनिया बनती जायेगी उतना ये बीच में बिचौलिये बढ़ते जाते हैं। इसलिए इनको काले कोटवाला कहा जाता है। जैसे आज के फैसले करनेवाले उनका नाम दिया है। जैसे जो बाल काटनेवाला होता है उसका क्या नाम देते है? नाई, हज्जाम। जैसे मुरली में बोला है आज के जो जज हैं वो ऐसे हैं जैसे हज्जाम। हजामत कर देते हैं। जैसे तिरूपति का मंदिर है ना? तो तिरूपति के मंदिर में जो भी जाते हैं क्या करा के आते हैं? अपनी हजामत करा के आते हैं। तो तिरूपति को कलियुगी दुनिया की यादगार वाला कहेंगे या सतयुगी दुनिया का नारायण कहेंगे? क्या कहेंगे? दो पत्नियाँ कहाँ होती हैं? ये द्वैतवादी युग कहाँ की शुरूआत है? ये आज की दुनिया की बात है।

Time: 28.35-30.55

Student: Baba, lawyers wear a black coat on ordinary clothes; what is its secret in an unlimited sense?

Baba: Someone pleads a case for someone. Advocates are appointed for the person who is not able to speak for himself. And are these advocates etc. appointed for courts in this Iron Age world, are they appointed when the world becomes old and *tamopradhan* (dominated by darkness or ignorance) or are they appointed when the world is pure? The more the world becomes *tamopradhan*, the number of middlemen keep increasing. This is why they are called the ones with the black coat. For example, a name has been coined for those who deliver judgements today. For example, what is the name given to those who cut hair? Barber *(nai, hajjam)*. For example, it has been said in the Murli, today's judges are like barbers. They shave people's heads. For example there is the Tirupati temple, isn't there? What do the people who go to the temple of Tirupati do? They get their heads shaved. So, will Tirupati be said to be a memorial of the Iron Age world or of Narayan of the Golden Age world? What will it be called? Where do people have two wives? Where does the dualistic world begin? It is about today's world.

समयः 40.40-46.12

जिज्ञासुः बाबा, साकारी, आकारी, निराकारी, फिर साकारी। मतलब?

बाबाः बाप साकारी से आकारी बना, आकारी से निराकारी। फिर साकार बनेगा। कितने आयाम हुए? पहले साकारी था। साकारी से आकारी बना, आकारी से निराकारी और निराकारी से फिर? फिर साकार बनेगा। कब बनेगा?

जिज्ञासु- 18 के बाद।

बाबा- हाँ, शुरूआत में साकारी था फिर साकारी से आकारी बना। कब?

जिज्ञासु- 76.

बाबा- नहीं। बाप आकारी तब से ही बन गया जब से ज्ञान गर्भ में आया। बेसिक नॉलेज में आया और मनन-चिंतन-मंथन शुरू हो गया। आकारी। आकारी से फिर निराकारी कब से हुआ? 76 से। निराकारी माना अपने स्वरूप का ज्ञान हो जाये कि मुझ आत्मा का ये पार्ट है। फिर कुछ करने को नहीं रह जाता सिवाए स्वरूप में टिकने के। जितना-2 स्वरूप में आत्मा टिकती जावेगी उतना-2 विस्तार स्वत:ही होता जावेगा। विस्तार में जाने की जरूरत नहीं है। विस्तार में जाने का पुरूषार्थ करने की जरूरत नहीं है। क्या जरूरत है? निराकारी स्टेज में टिकने की जरूरत है। तो जितना-2 निराकारी उतना-2 विस्तार स्वत:ही होता जाता है। अपने अनेक जन्मों की कहानी स्वत:ही खुलती जाती है और फिर निराकारी से साकारी। साकारी जब राम और कृष्ण की दोंनो ही आत्मायें अंतिम सम्पूर्ण स्टेज को प्राप्त कर जाये। विष्णु चुर्तभुज प्रत्यक्ष हो जाये तो साकारी हो जाता है।

Time: 40.40-46.12

Student: Baba, corporeal (*sakari*), subtle (*aakaari*), incorporeal (*niraakaari*) then corporeal again. What does it mean?

Baba: The Father changed from corporeal to subtle, subtle to incorporeal and then He will once again become corporeal. How many dimensions are involved? Initially he was corporeal. Then he changed from corporeal to subtle, from subtle to incorporeal and then He will again change from incorporeal to corporeal. When will He become this?

Student: After 2018.

Baba: Yes. He was corporeal in the beginning and then He changed from corporeal to subtle. When?

Student said something.

Baba: No. The father became subtle from the time he entered the womb of knowledge. As soon as he entered the path of basic knowledge he started thinking and churning. Subtle. Then, when did he change from subtle to incorporeal? From 1976. Incorporeal means that he should come to know of his form that this is the part of his soul. Then there is nothing more to do than to be constant in that form. The more the soul becomes constant in its form, the more it will expand automatically. There is no need to go into the expanse. There is no need to make spiritual effort to go into the expanse. What is needed? There is a need to become constant in an incorporeal stage. So, the more someone is incorporeal, the expansion takes place automatically. The story of his many births starts to be revealed automatically and then comes the stage of changing from incorporeal to corporeal once again. He becomes corporeal when the souls of both Ram and Krishna achieve the last stage of perfection, when the four armed Vishnu (*Vishnu Chaturbhuj*) is revealed; then he becomes corporeal.

जिज्ञासु- फिर बोला है बाप साक्षी हो जायेगा और बापदादा साथी हो जायेगा।

बाबा- तो बाप जो निराकार सुप्रीम सोल ज्योतिबिंदु है उसको साकार रहने की दरकार क्या है जब बच्चे ने बाप समान स्वरूप को प्राप्त कर लिया?

जिज्ञासु- फिर बोला शिवबाबा सदा कायम होंगे इस सृष्टि में।

बाबा- बापदादा सदा कायम होंगे?

जिज्ञासु- बाप सदा कायम होंगे इस सृष्टि में।

बाबा- बाप सदा कायम नहीं होंगे। शब्दों को ही बदल दोगे तो सारा अर्थ ही बदल जायेगा। इस सृष्टि पर सदा कायम कोई चीज़ है नहीं। सदा कायम तो एक शिवबाबा ही है। माना जो साकार स्वरूप है, निराकारी स्टेजवाला होगा लेकिन वो भी सदा कायम इस सृष्टि पर रहता है। और दुनिया में कोई आत्मा ऐसी नहीं है जो इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर आलराउन्ट पार्ट बजानेवाली है।

Student: Then it has been said that the Father will become a detached observer (*sakshi*) and Bapdada will become a companion (*saathi*).
Baba: So, is there any need for the incorporeal Supreme Soul point of light to remain corporeal when the child has achieved the stage equal to that of the Father?
Student: It has been said that Shivbaba remains in this world always.
Baba: Bapdada will remain always.
Student: The Father will remain always in this world.
Baba: The Father will not remain always. If you change the words then the entire meaning will change. There is nothing permanent in this world. Only one Shivbaba is permanent. It means that the corporeal form will have an incorporeal stage, but he is also permanent in this world. There is no other soul in this world which plays an allround part on this world stage.

जिज्ञासु- मतलब साढ़े चार लाख आत्माओं को कन्ट्रोलर। टोटल बच्चा बनाकर नौ लाख को....।

बाबा- कन्ट्रोल और शासन करना ये अधूरी दुनिया में होता है या सम्पूर्ण दुनिया में होता है? ये तो अधूरी दुनिया की बातें हैं। जो सम्पूर्ण बाप है वो तो वो चीज़ है जो नारा देता है स्वतंत्र रहो और स्वतंत्र रहने दो। जब बापों का बाप यहाँ आया हुआ है वो यह बता रहा है बच्चे आय एम योर मोस्ट ओबिडीयंट सर्वेन्ट। तो उस बाप से पढ़ाई पढ़नेवाला ये लक्ष्य लेकर के कैसे रह सकता है कि हम दूसरों के ऊपर कन्ट्रोल करे? कन्ट्रोल करनेवाली बात ही खत्म। यथा राजा तथा प्रजा। इसलिए सतयुग में गद्दियाँ नहीं दिखाई गयी है।

Student: I mean the controller of four fifty thousand souls. Totally there are nine hundred thousand children ….
Baba: Does control and governance take place in imperfect world or in a perfect world? These are issues of imperfect world. The perfect Father is the one who gives a slogan: remain free and let others be free. When the Father of fathers has come here, and he is telling: children, I am your most obedient servant. So, how can the one who studies from that Father have a goal to control others? The very issue of controlling ends. As the king so are the subjects. This is why thrones have not been depicted in the Golden Age.

जिज्ञासु- बाबा ये 2018 के बाद ये कन्ट्रोलिंग आयेगी.....

बाबा- फिर कन्ट्रोलिंग पॉवर-2। कन्ट्रोल जो है...

जिज्ञासु- बापदादा हद में स्वर्ग ले के आयेंगे मतलब हथेली में स्वर्ग देंगे।

बाबा- तो देंगे कि दे दिया है? हथेली माना बुद्धिरूपी हथेली में नई दुनिया का सारा खाका खिंचा हुआ रखा है उसको कहते हैं हथेली में स्वर्ग दे दिया। माना नई दुनिया की सारी प्लैनिंग बुद्धिरूपी हथेली में जिसके आ चुकी है उसका चित्र कृष्ण का बना दिया। कृष्ण हथेली

में स्वर्ग दिखाया और पाँव में नर्क □केल रहा है, लात मार रहा है। माने जो दुनिया भस्म होनेवाली है ब्राह्मणों की उस दुनिया को लात मार रहा है। इन गुरूओं को मारो गोली। ये गुरूओं की दुनिया है इससे कुछ लेना-देना नहीं है। ये ऐसे ही गड्□ में जानेवाली है। इसलिए एक और लात मारो जाए जल्दी से गड्□ में।

Student: Baba, will this controlling begin after 2018?
Baba: You are once again talking of controlling power. As regards control....
Student: Bapdada will bring heaven in a limited sense, i.e. give heaven on our palm.
Baba: Will He give or has He given it? Palm meaning the palm like intellect; the entire plan of the new world has been drawn on it. That is called 'giving heaven on the palm'. It means that the person on whose palm-like intellect the entire planning of the new world has been drawn has been shown in the form of Krishna. Heaven has been shown on the palm of Krishna and he is pushing hell with his leg. It means that he is kicking the world of Brahmins which is going to be destroyed. Shoot these gurus. We have nothing to do with this world of gurus. It is going to lead us to a pit anyway. This is why kick it once more so that it goes into the pit soon.

समयः 50.58-57.03

जिज्ञासुः ब्रह्माबाबा की सोल गुल्ज़ार दादी में प्रवेश कर के वाणी चलाता है।

बाबा- हाँ, जी।

जिज्ञासु- लेकिन वो मन, बुद्धि से शिवबाप से कम्बाइन्ड रहती है।

बाबाः याद में रहती है।

जिज्ञासु- याद में रहती है।

बाबा- हाँ, जी।

जिज्ञासुः लेकिन, बाप, शिवबाप कहाँ रहते हैं?

बाबाः शिवबाप जैसे बाबा ने बोला है तुम बच्चे मेरी याद में जितना रहते हो उतना मैं तुम्हारे साथ हूँ।

Time: 50.58-57.03
Student: Brahma Baba's soul enters Gulzar Dadi and narrates the *[Avyakt] vani*.
Baba: Yes.
Student: But it remains combined with Father Shiv through the mind and intellect.
Baba: It remains in remembrance.
Student: It remains in remembrance.
Baba: Yes.
Student: But where does the Father, the Father Shiv stay [at that time]?
Baba: The Father Shiv…, for example, Baba has said, the more you children remain in My remembrance, I am with you to that extent.

जिज्ञासु- प्रवेश करते हैं?

बाबा- प्रवेश नहीं करते। गुल्जार दादी में शिवबाप का प्रवेश तो हो ही नहीं सकता। अगर शिवबाप का प्रवेश गुल्जार दादी में हो जाये फिर तो ये साबित हो जाता है कि बाप सूक्ष्मवतनवासी भी है। सुप्रीम सोल शिव कभी भी सूक्ष्मवतनवासी नहीं होता। उसको सूक्ष्म

शरीर ही नहीं है। हाँ, इतना जरूर कहा है तुम बच्चे जितना मुझे याद करते हो मैं तुम्हारे साथ हूँ। तो ब्रह्मा की सोल भी बच्चा है और वो बच्चा जो सूक्ष्मशरीरधारी है वो गुल्जार दादी में प्रवेश करता है। जब प्रवेश करता है तो बहुत पॉवरफुल याद होती है उनकी। कोई को जब कोई चाहनेवाली चीज़ मिल जाती है तो उसका नशा चढ़ता है या घटता है? चढ़ता है। ब्रह्माबाबा बचपन से ही गुल्जार दादी को अपने नजदीक खींचना चाहते थे और गुल्जार दादी भाग जाती थी। कभी भी उनके नजदीक नहीं आई। आखरीन जीवन भर की जो कशिश थी वो शरीर छोड़ने के बाद उनकी मुठ्ठी में आ गई और उन्होंने दादी में प्रवेश कर लिया। तो उनका नशा तो दिन दूना, रात चौगुना हो जाता है और बाबा की याद भी आती है अच्छी। तो जो बाबा की याद में वो साथ में है; शिवबाप के साथ है इसलिए उनकी बुद्धि ऐसे काम करती है जैसे कि वो साथ ही साथ है। जैसे कि कवि लोग है सात्विक स्टेज में रह करके जो कवितायें करते हैं वो कवितायें सच्ची साबित हो जाती हैं।

Student: Does He enter?

Baba: He does not enter [Gulzar dadi]. The Father Shiv cannot enter Gulzar Dadi at all. If the Father Shiv enters Gulzar Dadi then it proves that the Father is also a subtle world dweller. The Supreme Soul Shiv never becomes a subtle world dweller. He does not have a subtle body at all. Yes, He hascertainly this, the more you children remember Me, I am with you to that extent. So, Brahma's soul is also a child and that child who has a subtle body enters Gulzar Dadi. When he enters her, he remains in a very powerful remembrance. When someone gets something that he likes, does he feel intoxicated about it or does the intoxication decrease? It increases. Brahma Baba wanted to pull Gulzar Dadi towards himself from her very childhood and Gulzar Dadi used to run away. She never came close to him. Ultimately, the attraction that he had for her throughout the life bore fruits after he left his body and he entered Dadi. So, his intoxication increases by leaps and bounds and he also remembers Baba well. So, when he is with Baba in his remembrance, he is with the Father Shiv; this is why his intellect works as if He is with him. For example, the poems that poets write in their pure stage prove to be true.

जिज्ञासु- तो अभी शिवबाबा में साकार बाप ..... उनका रोल बापदादा के अंदर है?

बाबा- उनका कोई... ?

जिज्ञासु- उनका कोई पार्ट है?

किसीने कहा- रोल।

बाबा- किसका?

जिज्ञासु- शिवबाबा में मतलब शिवबाप और प्रजापिता ब्रह्मा.....

बाबा- शिवबाप का रोल है ज्ञान सुनाने का। वो सिर्फ क्लैरिफिकेशन देने का टीचर का रोल है। उस रोल का नाम ही है टीचर, सुप्रीम टीचर। वो जैसा क्लेरिफिकेशन दे सकता है शास्त्रों का, अव्यक्त वाणी का, मुरलियों का ऐसा क्लेरिफिकेशन दुनिया की कोई भी मनुष्य मात्र आत्मा नहीं दे सकती ये उनका रोल है वर्तमान में।

जिज्ञासु- बापदादा के अंदर में हमारा जो अभी बाबा है उनका कोई पार्ट है क्या?

बाबा- बताया तो जो साकार में पार्ट है उसका नाम है, उसका टाईटल है सुप्रीम टीचर। आत्मायें दो है। एक है सुप्रीम सोल जो सुप्रीम टीचर का पार्ट बजाती है और जिस तन के द्वारा पार्ट बजाती है वो तन वही प्रजापिता का है। माना पतित तमोप्रधान और उसमें भी कृष्ण की सोल प्रवेश है।

Student: So, now the corporeal father in Shivbaba..... does he have a role in Bapdada?
Baba: Does he…?
Student: Does he have any part?
Someone said: Role.
Baba: Whose?
Student: In Shivbaba; I mean to say the Father Shiv and Prajapita Brahma.....
Baba: The role of the Father Shiv is to narrate knowledge. That is a role of just the teacher, to give clarification. The name of that role itself is, teacher, Supreme Teacher. The clarification of scriptures, *Avyakta vanis*, murlis that He can give, cannot be given by any human soul. This is His role at present.
Student: Does our Baba have any part in Bapdada?
Baba: It has been told just now that the name, the title of the corporeal part is Supreme Teacher. Souls are two. One is the Supreme Soul who plays the part of Supreme Teacher and the body through which it plays a part belongs to Prajapita. It means that [the body] is sinful, *tamopradhan*, moreover the soul of Krishna is in in it.

जिज्ञासु- लेकिन दादी गुल्जार के अंदर जाता है तो.....
बाबा- उनकी अभी एक बात पूरी नहीं हुई। आप कुछ और पूछना चाहते हैं जो कि...
जिज्ञासु- ..... बाप दादा का जो रोल चल रहा है, बाप में दो बाप हैं।
बाबा- बाप जब कहा जाता है तो बाप कहने मात्र से ही हमारे बुद्धि में कॉन्सेन्ट्रेशन सुप्रीम सोल के लिए बैठना चाहिए। रामवाली आत्मा के तरफ हमारा कॉन्सेन्ट्रेशन नहीं जाना चाहिए। वो हमारा बाप है भल वो साकार शरीर राम के चोले में है लेकिन हमारा कॉन्सेन्ट्रेशन सुप्रीम सोल के लिए है। वो बाप है और ब्रह्मा हमारा दादा है।
जिज्ञासु- अभी गुल्जार के अंदर जब जाते है तो बोलते हैं बापदादा दोंनो आ रहे हैं।
बाबा- दोंनो आ रहे हैं ऐसे नहीं बोला किसी अव्यक्त वाणी में। सिर्फ बोला जाता है बापदादा। इसका मतलब ये है कि जितना ही ब्रह्मा की सोल याद करती है सुप्रीम सोल बाप को उतना ही वो सुप्रीम सोल बाप के साथ है। माना दादावाली सोल जो सृष्टि का पहला पत्ता है वो पहला पत्ता जैसे कि दादा है, बड़ा भाई है। वो दादा है और जिसकी याद में बैठा हुआ है गुल्जार दादी में वो है बाप। इसलिए बापदादा कहा जाता है। जितना मुझे याद करते हो उतना मैं तुम्हारे साथ हूँ। तो जब साथ है तो साथ ही साथ नाम लेना चाहिए ना? तो नाम हुआ बाप दादा।

Student: But when he enters Dadi Gulzar....
Baba: His one topic has not yet completed. Yes, you wanted to ask something else, which… .
Student:.... The role of Bapdada that is being played; there are two fathers in the 'Bap'.
Baba: When it is said, 'Bap', then just by saying the word 'Bap' our intellect should concentrate on the Supreme Soul. Our concentration should not be on the soul of Ram.

Although he is our father, although He is in the corporeal body of Ram, our concentration is on the Supreme Soul. He is the father and Brahma is our Dada.
Student: When he enters Gulzar, it is said that both Bap and Dada are coming.
Baba: It has not been said in any *Avyakta vani* that both are coming. It is only said Bapdada. It means that Brahma's soul is with the Supreme Soul Father to the extent it remembers Him. It means that the soul of Dada who is the first leaf of the world; that leaf is like Dada, the elder brother. He is Dada and the one in whose remembrance he is sitting in Gulzar Dadi is Bap. This is why it is said Bapdada. I am with you to the extent you remember Me. So, when He is with him, then His name should be taken along with his name, shouldn't it? So, the name is Bapdada.

समयः 57.10-58.53

जिज्ञासुः बाबा, पहले-पहले झाड़ छोटा था बाद में झाड़ बड़ा हो जाता है। इसका मतलब क्या है?

बाबाः पहले दो पत्ते निकलते हैं, फिर चार पत्ते निकलते हैं। फिर चार से आठ निकलते हैं। फिर मल्टिप्लाई होता रहता है।

जिज्ञासुः इसलिए पहले झाड़ छोटा होता है, इसलिए?

बाबाः कोई भी बीज बोया जाता है तो पहले दो ही पत्ते निकलते हैं कि इकट्ठे निकल आते हैं?

सभी- दो ही।

बाबा- ऐसे ही यहाँ भी नई सृष्टि का बीजारोपण होता है। दो से चार को संदेश मिलता है। चार से आठ को मिलता है। आठ से सोलह को मिलता है। मल्टिप्लिकेशन होता जाता है।

Time: 57.10-58.53
Student: Baba, first of all, the tree was small; later on the tree grows big. What does it mean?
Baba: Initially, two leaves emerge; then four leaves emerge. Then eight leaves emerge from four leaves. Then they keep multiplying.
Student: Is this why initially the tree is small?
Baba: When any seed is sowed, do two leaves emerge initially or do all the leaves emerge simultaneously?
Everyone: Only two.
Baba: Similarly, here the sowing of the seed of the new world takes place. Two [souls] give message to four. Four give message to eight. Eight give message to sixteen. Multiplication keeps taking place.

……

Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.